Vol-13 Special Issue- 1.2 ISSN- 2349-7076

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

शोध लेख का शीर्षक: वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा और भारतीय फिल्में

शोध निर्देशक डॉ राजीव पंड्या
प्रिंसिपल, गवर्नमेंट सी.टी.ई उज्जैन (मध्य प्रदेश)

शोधार्थी डॉ. नीलू दुबे
सम्राट विक्रमादित्य यूनिवर्सिटी उज्जैन (मध्य प्रदेश)

सारांश

भारत के G20 देशों की अध्यक्षता का थीम वाक्य "वसुधैव कुटुंबकम्" एक वाक्यांश ही नहीं वरन्, भारत की आत्मा , भारत का दर्शन,भारत का दृष्टिकोण है विचारधारा है इसी लिए भारत को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था। वसुदेव कुटुंबकम का शाब्दिक अर्थ है "संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार" किंतु इसकी आत्मा एक व्यावहारिक रूप है जिसमें सभी जीवो के प्रति क्षमा, दया, प्रेम, करुणा और सम्मान का भाव जगा कर एक परिवार के रूप स्थापित करना है, अर्थात विश्व कल्याण की भावना सभी के मन में होना चाहिए। वसुधैव कुटुंबकम की भावना को जगाने में भारतीय फिल्मों का भी बहुत योगदान रहा है प्राचीन से अर्वाचीन तक कई फिल्में वसुधैव कुटुंबकम की भावना से ओत-प्रोत रही है। प्रस्तुत लेख में वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को समझने में फिल्मों के योगदान पर चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

"वसुधैव कुटुंबकम" महोपनिषद अध्याय 6 मंत्र 71 से लिया गया एक वाक्यांश है।

पूरा श्लोक इस प्रकार है -

अयं निजः परोवेती, गणना लघु चेत्तसाम्
उदार चरितानाम् तू वसुदेव कुटुंबकम्।

अर्थात वह मेरा बंधु है, वह मेरा बंधु नहीं है, इस प्रकार की गणना छोटे हृदय वाले लोग करते हैं, उदार चित्त वालों के लिए तो संपूर्ण पृथ्वी ही उसका परिवार है।

वसुधैव कुटुंबकम् एक मानवतावादी दृष्टिकोण है, आदर्श दर्शन और भारतीय प्रायद्वीप की विचारधारा है और इसकी प्रमुख विशेषताएं है मानवीय संरक्षण, संस्कृति संवर्धन,पर्यावरण संरक्षण सर्व धर्म संभाव,सभी प्राणियों के प्रति दया प्रेम एवं सम्मान का भाव, जो जाति, धर्म, भाषा, रंग, बोली संस्कृति, राष्ट्र इन सबसे ऊपर सार्वभौमिक एकता, उदारता और मानवता का प्रतीक है यही भाव संपूर्ण पृथ्वी की सजीवता का आधार भी है। वसुदेव कुटुंबकम की भावना को बढ़ाने में प्राचीन से अर्वाचीन तक भारतीय फिल्मों का काफी योगदान रहा है प्रस्तुत है कुछ ऐसी चुनिंदा फिल्मों का संक्षिप्त समीक्षात्मक उल्लेख जो वसुधा वह कुटुंबकम की भावना से ओत-प्रोत है मेरा मानना है इस समीक्षात्मक लेख से वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा की समझ विकसित होगी।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा और और भारतीय फिल्मे

डॉक्टर कोटनीस की अमर कहानी

महाराष्ट्र के सोलापुर 1910 में जन्मे दो द्वारकानाथ शांताराम कोटनीस ने 1938 में चीन जापान युद्ध के दौरान भारत के मेडिकल मिशन के दौरान चीनी सैनिकों की विपरीत परिस्थितियों में जी जान लगाकर सेवा की चीन में रहते हुए उन्होंने चीनी महिला को इंग्लैंड से विवाह किया एवं मृत्यु पर्यंत चीन में ही रहे उनके त्याग सेवा एवं अदम्य साहस के लिए उन्हें चीनी शहीदों के साथ सम्मानित किया जाता है चीन की जनता उन्हें प्यार से के देव के नाम से पुकारती है डॉक्टर कोटनीस की अमर कहानी फिल्म भारत चीन मैत्री का प्रतीक है 1942 में मिर्गी के दौरान डॉक्टर कोटनीस की मृत्यु हो गई।संध्या एवं व्ही शांताराम अभिनीत ,राजकमल प्रोडक्शन हाउस, के बैनर तले बनी एवं व्ही. शांताराम निर्देशित ही यह फिल्म 1946 में प्रदर्शित की गई जिसमें डॉक्टर कोटनीस बने शांताराम का एक वाक्य जिसमें वह कहते हैं की "चीनी सैनिक के फोड़े की पस निकाल कर पहले वह अपने शरीर में डालेंगे और दवा का प्रयोग वह पहले अपने ऊपर करेंगे इसके बाद वह किसी चीनी सैनिक के शरीर पर इस दवा का असर देखेंगे"एक प्रसिद्ध वाक्य है संध्या उन्हें ऐसा करने से मना करती है लेकिन वह नहीं मानते वसुदेव कुटुंबकम की भावना को प्रदर्शित करने के लिए इससे अच्छा उदाहरण शायद ही कोई हो।

श्रीमान् श्रीमती - संजीव कुमार राखी इस फिल्म में मुख्य किरदारों में है जिन्होंने श्रीमान श्रीमती की भूमिका निभाई है 1982 में बनी इस फिल्म में दो अलग-अलग विचारधाराओं के बेमेल पति पत्नी के जोड़ों को सुधारने का काम इस फिल्म में दिखाया गया है पहले जोड़ी राकेश रोशन और दीप्ति नवल की और दूसरी अमोल पालेकर और सारिका की है दोनों ही जोड़ियां में एक व्यक्ति खुले विचारों का और एक आदर्शवादी बताया है राखी और संजीव कुमार इन दोनों को बाहरी दुनिया की सच्चाई दिखा कर सही रास्ते पर लाते हैं और जब जाने लगते हैं तब यह लोगों ने रोकते हैं तब वह बताते हैं कि उनका भी यह खुशहाल परिवार था एक छोटी बेटी थी जिसे प्रेम विवाह कर लिया उन दोनों ने अपनी बच्ची के नाम सारा कारोबार और पैसा कर दिया और खुद देशाटन पर निकल गए जब वापस आए तब तक उनकी बच्ची आत्महत्या कर चुकी थी लालची दामाद ने उसको इतना परेशान किया कि उसने मौत को गले लगा लिया तब से दोनों पति-पत्नी ने यह संकल्प लिया कि वह ऐसे बेमेल जोड़ों को सुधारने का काम करेंगे। अब हर बिगड़ा हुआ जोड़ा उनका परिवार था।

अतिथि तुम कब जाओगे - परेश रावल ,अजय देवगन और कोकड़ा सेन शर्मा कि इस पिक्चर में जोरदार कॉमेडी है इस फिल्म में परेश रावल जो गांव के एक बुजुर्ग रहते है महानगर में एक परिवार में गलती से आ जाते है शुरू में तो अजय देवगन और उनकी पत्नी कोकड़ा सेन शर्मा बहुत बुरा लगता और वह उनको भगाने की प्रयास करने लगते। किंतु धीरे-धीरे साथ रहते रहते एक बुजुर्ग दादाजी के सारे कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं, परेशानियों का हल निकालते हैं और आर्थिक सहायता भी करते हैं धीरे-धीरे उनको भी चाचा जी परेश रावल प्यार हो जाता हैं वह कहते हैं कि चाचा जी आप मत जाइए और अंत में असली भतीजा प्रकट हो जाता तब पता चला कि वह तो किसी और के घर में ही इतने दिन से थे एक कॉमेडी के माध्यम से बस उधर कुटुंबकम की भावना इस फिल्म में दर्शाई गई है।

गांधी- 1982 में बनी इस फिल्म का निर्माण रिचर्ड एडिनबरों ने किया गांधी की भूमिका बेन किंग्सले ने निभाई गांधी जैसी नॉन कमर्शियल फिल्म के लिए उन्होंने पैसे जुटाए इस फिल्म में तत्कालीन परिस्थितियों जैसे अंग्रेजी शासन का जुल्म और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को दर्शाया गया है की किस प्रकार भारतीयों ने धर्म जाति लिंग छुआछूत से परे होकर स्वतंत्रता हासिल की और अंग्रेजी हुकूमत के जुल्म दिखाने वाले निर्माता भी एक अंग्रेज ही थे, यह फिल्म भी वसुधैव कुटुंबकम का एक बेहतरीन उदाहरण है भारतीय नायक महात्मा गांधी को चरितार्थ करने वाली यह फिल्म एक अंग्रेज ने बनाई।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

रोबोट 2.0 - शानदार विजुअल इफेक्ट्स के साथ इस फिल्म में रजनीकांत, चिट्टी और 2.0 के रूप में अभिनय कर रहे हैं अक्षय कुमार पक्षीराज बने हैं जो सकारात्मक सोच वाले खलनायक है और पक्षियों पर वाले मोबाइल विकरण के खराब प्रभावों को दर्शाते हैं पर्यावरण मित्र यह फिल्म भी वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देती है।

मेरा नाम जोकर राज कपूर निर्देशित एवं राज के पूर्व अभिनीत यह फिल्म वसुधैव कुटुंबकम का एक मुख्य उदाहरण है इसमें सर्कस के दौरान भारतीय एवं रूसी कलाकारों का सुदृढ़ सामंजस्य दिखाया है। फिल्म की रूसी हीरोइन के मन में भारतीय राज कपूर के प्रति करुणा एवं प्रेम ,भाषा की अनभिज्ञता के बावजूद सुंदर तरीके से फिल्माया गया है।

फिल्म क्वीन कंगना रानाउत इस फिल्म में कंगना पंजाब के एक साधारण परिवार की लड़की रहती है विदेश में रहने वाले एक भारतीय के द्वारा ठुकराए जाने पर अपने हनीमून टिकट को भुनाने एमस्टरडम जाकर स्ट्रगल करके तीन अलग-अलग देशों के लड़कों के साथ रहती है किंतु अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ता, धीरे-धीरे साथ रहते रहते वह सभी आपस में मित्र बन जाते और भारतीय संस्कृति का सम्मान करने लगते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जब हम फिल्म देखते हैं तब वसुदेव कुटुंबकम की भावना हमारे मन में आ ही जाती है किंतु वर्तमान परिस्थितियों के साथ इसका तालमेल बैठाना बड़ा कठिन है।जब हम पिक्चर देख कर निकलते हैं तो कुछ दिन तक फिल्म मन मस्तिष्क पर छाई रहती है किंतु समय के साथ धूमिल हो जाती है ,किंतु अब समय आ गया है कि हम वसुधैव कुटुंबकम की भावना को लेकर चले, जो हमारे देश के विकास में सहायक होगी अपने मन से बुराइयां हटाए और "राष्ट्रप्रथम मैं अंतिम" की भावना को अपनाऐ। भारत की परंपरा है

सर्वे भवंतु सुखिना, सर्वे संतु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मां कश्चित दुःख भाग भवेत्

References

ShrivqstavaS. "वसुधैव कुटुंबकम का संदेश" https://sahityapediya.com

"Vasudhaiva Kutumbcom G20" https://pwonlyias.com

"भारत चीन के बीच दोस्ती की मिसाल है डॉक्टर कोटनीस की अमर कहानी "https://thewire.com

"श्रीमान श्रीमती(फिल्म)"https://wikipediya.org

"अतिथि तुम कब जाओगे"स्वयं समीक्षा

गांधी(फिल्म) https://Wikipedia.org

AI overview-Robot 2.0

फिल्म क्वीन की स्वयं समीक्षा